B.A II Hons (History)
Paper - III

Ⓐ Determine the achievement of Rajendra chola?

Ans→ राजराजा महान के पश्चात उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम राजा बना जो "गंगईकोण्ड चोल" और "उत्तम चोल" भी कहा जाता है। युवराज के रूप में राजेन्द्र प्रथम ने राज्य के मामले में सक्रिय भाग लिया था। सिंहासनारूढ़ होने पर अपने आपको एक महान योद्धा एवं प्रशासक सिद्ध किया वह सुनियंत्रित और सुकेन्द्रीत सेना तथा प्रशासन का स्वामी था। तथा उसके पास अच्छी नौ सेना थी। इन्हीं सब तत्वों के आधार पर अपने 33 वर्षीय शासनकाल में उसने चोल साम्राज्य का पूर्ण विकास किया और भारत के बाहर में सुदूरपूर्व यहाँ तक कि चीन तक फैलाया। उसका शासन न केवल दक्षिण भारत का अपितु भारतीय इतिहास का गरिमामय अध्याय है।

स्रोत→ राजेन्द्र चोल के इतिहास के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। तथा इसके शासन का तिथिक्रम भी अपेक्षाकृत स्पष्ट है। इसके शासन काल में अनेक शिलालेख प्रकाशित हुए। "तिरुवालंगाडु तथा तंजौर" दानपत्रों से भी इसका वृतांत स्पष्ट हो जाता है। साथ ही अन्य राजवंशों के आलेखों से भी इसके संबंध में बाते जानी जाती है। ज्यों-ज्यों राजेन्द्र चोल की राजनैतिक उपलब्धियों में वृद्धि होती जाती थी, इसके नाम के साथ उपलब्धि सूचक अन्य राजनैतिक उपाधियाँ भी जुड़ती जाती थी। इस तरह का क्रम उसके शासन के 13वें वर्ष तक चला। तीसरे वर्ष से तेरहवें वर्ष तक उपाधियों के तिथिक्रम से यह जानना भी सरल है कि उसकी राजनैतिक और सामरिक उपलब्धियों का क्रम क्या था।

राजेन्द्र प्रथम ने अपने शासन के प्रारंभ में ही अर्थात सातवें राज्य वर्ष में अपने पुत्र राजाधिराज को युवराज नियुक्त कर दिया था। इस तिथि से अगले 25 वर्षों तक राजाधिराज राजकेशरी अपने पिता राजेन्द्र परकेशरी का सहयोगी रहा। इस अवधि में उसके द्वारा भी कुछ

Scanned with CamScanner

अभिलेख प्रकाशित किये गये जो राजेन्द्र के अभिलेखों से ज्ञात तथ्यों की न केवल सम्पुष्टि करते है अपितु वे पूरक भी है। राजेन्द्र के इतिहास के लिए "महावंश" का अध्ययन भी उपादेय है। इसमें राजेन्द्र के लंका अभियान का वर्णन है।

दिग्विजय → राजेन्द्र के आरंभिक विजयों के रूप में ऐसा उल्लेख है कि उसने वलैप्पैडूरू, तलैतक्कोलम, मनैनूर श्रीविजय ~~मा~~ तथा मदमलिंगम, ~~और श्री विजय तथा~~ पर विजय किया। वलैप्पैडुरू कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों की दक्षिणी भाग में था। श्रीविजय सुमात्रा में एक राज्य था। 'मनैनूर' संभवतः श्रीविजय तथा पन्नई के मध्य में एक राज्य था। 'तलैतक्कोलम' को तक्कोल माना गया है। प्रतीत होता है कि राजेन्द्र प्रथम ने एक ही अभियान में संग्रामविजयोतुंगवर्मन के राज्य के निम्न भागों तथा राजधानी कडारम् पर अधिकार कर लिया।

लंका विजय → शासन के पाँचवे वर्ष में (1017-1018) ई० राजेन्द्र प्रथम ने संपूर्ण लंका पर विजय प्राप्त किया। महावंश के अनुसार इस समय लंका का राजा 'महेन्द्र पंचम' था और उसके 36वें राजत्व वर्ष में राजेन्द्र चोल का अभियान लंका पर हुआ था। इस अभियान का सामना लंका का राजा इस बार न कर सका तथा बुरी तरह पराजित एवं अपमानित हुआ। तंजौर अभिलेख एवं अन्य अभिलेखों का विवरण है कि राजेन्द्र ने लंका को हरा कर उसका मुकुट, रानी, कन्यायें, सुन्दर एवं बहुमूल्य रत्न, प्रभुत वैभव, तथा संपूर्ण लंका को हस्तगत कर लिया। साथ ही लंका के राजा से वह मुकुट और इन्द्रमाला भी हस्तगत कर ली ~~जो~~ जिसे 'वरगुण पाण्डय' ने अपनी विपन्नावस्था के कारण धरोहर के रूप में लंका के पास रख दी थी। पराजित होने पर लंका का राजा महेन्द्र राजेन्द्र के शरण में आ गया। 'महावंश' का विवरण इस अभिलेख के कथन की पूर्णतया समर्थन करता है। इस प्रकार राजेन्द्र का अधिकार समस्त लंका पर हो गया। इस आक्रमण से लंका के बौद्ध विहारों को बड़ी क्षति पहुँची। चोलों ने लंका में तत्र-तत्र कई शिव तथा विष्णु मंदिर स्थापित किये।

Scanned with CamScanner

पाण्ड्य केरल →: राजराजा ने अपने शासन के आरंभिक वर्षों में ही पाण्ड्य तथा केरल पर अधिकार कर लिया था। संभवतः इस क्षेत्र पर अपने प्रभुत्व के स्थायित्व के लिए राजेन्द्र को भी युद्ध करना पड़ा था। यद्यपि यह क्षेत्र साम्राज्य का अंग बन चुका था। 1018 ई० के आस-पास, अपने शासन के छठे वर्ष में उसने केरल तथा उसके आस पास के द्वीपों, जिसमें 'मालद्वीप' प्रमुख था, को जीतकर 'पाण्ड्य' जनपद के अधीन किया तथा वहाँ अपने पुत्र 'जटावर्मन सुन्दरचोल' को उपराजा नियुक्त किया। जटावर्मन सुन्दर चोल के 'तंजौर' दानपत्र से यह पता चलता है कि राजेन्द्र के कडारम अभियान से प्रभावित होकर कम्बुज नरेश ने अपनी राजलक्ष्मी की रक्षा के लिए राजेन्द्र चोल से मैत्री संबंध स्थापित किया। जटावर्मन सुन्दर चोल उपराजा या युवराज के रूप में इन प्रदेशों पर 1018 ई० से 1054 ई० तक शासन करता रहा।

चालुक्य राजा →: 1021 ई० के लगभग चालुक्य-चोल संघर्ष पुनः तीव्र हो उठा। पश्चिम चालुक्य राजा जयसिंह द्वितीय के साथ उसका संघर्ष हुआ। चालुक्य प्रलेखों से ज्ञात होता है कि जय सिंह द्वितीय ने राजेन्द्र प्रथम को पराजित किया, पर तमिल प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि "जयसिंह द्वितीय ने मुसंगी को अपनी पीठ दिखाई और स्वयं छिप गया।" संघर्ष का परिणाम चाहे कुछ भी रहा हो, जय सिंह द्वितीय का अधिकार 'तुंगभद्रा' तक के प्रदेश पर बना रहा।

गोदावरी, बस्तर, उड़ीसा →: राजेन्द्र प्रथम ने पूर्वी भारत की ओर अभियान का उत्तरदायित्व अपने सेनापति को सौंप दिया। चोल सेना गोदावरी, बस्तर, उड़ीसा को पार कर पश्चिमी बंगाल पहुँची। उसने दो शासकों को पराजित किया, गंगा को पार किया, एक और के शासक को नष्ट किया। फिर गंगा को पार किया तथा महीपाल प्रथम पर विजय प्राप्त की और स्वदेश लौट आई। विजयी सेनापति ने राजेन्द्र के द्वारा भेजी गई बधाई संदेश गोदावरी के तट पर प्राप्त की।

Scanned with CamScanner

५

कडारम् के विरुद्ध राजेन्द्र प्रथम के अभियान का विवरण इस प्रकार दिया गया है। "उन्मत्त सागर के मध्य में अनेक जहाज भेजकर काडरम् के राजा संग्रामविजयोत्तुंगवर्मा को उसकी सेना के हाथियों तथा न्यायपूर्वक संचित धन सहित अपने अधिकार में करके उसने श्री विजय, पन्नई, प्राचीन मलैयूर, मायीरुडिंगम, इलंगशोक, मप्पपलम, मेविलिम्बंगम, वलैप्पंडूरू, तलैत्तक्कोलम, मदमलिंगम तथा कडारम् पर अधिकार कर लिया, जो गहरे समुद्र द्वारा सुरक्षित था। ये सभी राज्य सुमात्रा एवं मलाया प्रायद्वीप के आस-पास थे।

राजेन्द्र प्रथम के राज्यकाल के अंत में पश्चिमी चालुक्यों ने सोमेश्वर प्रथम के अधीन चोल राज्य पर आक्रमण किया। चोल युवराज राजाधिराज ने कृष्णा के तट पर 'पुण्डी' के स्थान पर विजय प्राप्त की, कल्याण को लूटा तथा द्वारपाल की मूर्ति उठा लाया। चोल आक्रमण चालुक्यों के लिए अपमानजनक तथा विनाशकारी था।

"सिद्धान्त सारावली" के लेखक शिवाचार्य त्रिलोचन का उल्लेख है कि राजेन्द्र चोल ने गंगा तट के शुद्ध शैव विद्वानों को काँचीपुरम में बसाया था, जो इसके अभियान का एक सांस्कृतिक परिणाम समझा जा सकता है। अपने पूर्वी भारत अभियान के उपलक्ष्य में उसने एक ~~तालाब~~ तालाब निर्मित करवाया तथा उसमें सैनिकों द्वारा लाया गया गंगाजल डलवाया। तदुपरान्त उसने "गंगैकोण्ड" की उपाधि धारण की। इसने "गंगैकोण्ड चोलपुरम्" नगर की स्थापना की तथा उसे अपनी राजधानी बनाई।

राजेन्द्र के जीवन काल में चोल साम्राज्य अचल रहा एवं राजनैतिक युद्धों को छोड़कर सर्वत्र शांति रही। अपने ३२ वर्षीय शासन काल में इसने चोल साम्राज्य का सर्वांगीण विकास किया और चोल समृद्धि को अक्षुण्ण रखा। उसका साम्राज्य इतना विस्तृत हो चुका था कि उसकी सुरक्षा के लिए कहीं न कहीं युद्ध चलते रहना अपरिहार्य सा हो गया था।

युद्ध में निष्फल ही वह प्रचंड नीति अपनाता था। यहाँ तक कि न्यायुक्त संग्राम में वह सामान्य नैतिक नियमों के परिपालन का भी ध्यान न रख पाता था और स्त्री, ब्राह्मण, वृद्ध तक को आहत एवं नष्ट भ्रष्ट कर दिया करता था। किन्तु सामान्य प्रशासन में वह प्रजासुख का ही ध्यान अधिक रखता था।

राजेन्द्र की समस्त उपलब्धियों को हम उसके चार विरुदों के माध्यम से जान सकते हैं। ये चार विरुद थे; मुदीकोण्ड, गंगईकोण्ड, कडारंकोण्ड तथा पण्डितचोल। मुदीकोण्ड से उसके पांड्य, केरल और सिंहल के अधिपत्य की सूचना मिलती है। गंगईकोण्ड की उपाधि से उसके वेंगी, उड़ीसा और गंगा (बंगाल) तक के विजयों की ध्वनी मिलती है। तथा 'कडारंकोण्ड' उपाधि उसके कडारम् द्वीप के विजय का प्रतीक है। "पंडितचोल" से उसके कला एवं विद्या के प्रति अनुराग का पता चलता है। उसने चीनी सम्राट के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये तथा 1016 ई० एवं 1033 ई० में अपने राजदूत भेजे। कहा जाता है कि राजेन्द्र चोल ने एक वैष्णव-केन्द्र में 340 विद्यार्थियों के लिए एक वैदिक महाविद्यालय की व्यवस्था की। उसमें 14 आचार्य नियुक्त किये। तथा संस्था के खर्च के लिए 45 वेली भूमी दान में दी।

इस प्रकार राजेन्द्र प्रथम महान पिता का महान पुत्र था। वह लगभग 32 वर्षों तक चोल साम्राज्य के शक्ति एवं सम्मान की वृद्धि में संलग्न रहा।

— x — x —